om 3 delhi final_Page 1 and 2 25/04/2015 18:28 Page 2

वो ऐसी मूरत हैं...

जब दादी जानकी को देखते हैं तो वे ज्ञान की मूर्ति दिखाई पड़ती हैं। वे मुरली के ज्ञान को इतना सहज तरीके से स्पष्ट करती हैं, और न केवल स्पष्ट करती हैं बल्कि साथ साथ परमात्म स्नेह की शक्ति से दूसरे के ज़हन में भी उतार देती हैं। दादी परमात्मा के महावाक्यों का बहुत गहराई से चिंतन भी करती और स्वयं प्रति उसे प्रयोग भी करती। प्रयोग करके फिर दूसरों को सुनाती हैं जिसके कारण ही सबके दिल में अमिट छाप छोड़ती हैं। मैंने देखा है कि जब भी दादी जी के पास जाएंगे तो वे सदा ज्ञान की ही बातें करेंगी और एक बात ज़रूर कहेंगी कि आज परमात्मा के महावाक्य सुनाओ और बाबा हमें क्या बना रहा है उसके बारे में सोचो, ये सदा सभी को कहती रहतीं।

- ब्र. कु. गंगाधर

दादी बाबा के बनाये हुए नियम पर पक्की रहती हैं, जैसे कि अमृतवेला करना, क्लास करना, ट्रैफिक कंट्रोल, ये स्मृति स्वत: रहती है। दादी यात्रा के समय भी श्रीमत को नहीं भूलतीं। चाहे कोई भी कार्य कर रही हों, किसी भी कार्य में व्यस्त हों लेकिन बीच में एक मिनट के लिए भी सही परमात्मा को याद अवश्य करेंगी। दादी जी को हमने देखा कि दादी जी विदेश सेवाओं में भी गईं, वहा भाषाओं को न जानते हुए भी अपनी उच्चतम अवस्था से या यूं कहें कि आध्यात्मिक व्यक्तित्व से सबके दिलों में मन ही मन संवाद स्थापित कर लेती हैं और दूसरे के भाव भी समझकर उन्हें सूक्ष्म तरीके से सूक्ष्म शक्तियों का सहयोग करती रहती हैं। परिणामस्वरूप सामने वाले चाहे किसी भी मज़हब के हों, जाति के हों, रंग के हों, वे इस मानसिकता से ऊपर उठकर दादी जी से प्यार करते हैं। दादी जी में सबसे बड़ी चीज़ परमात्म शक्ति के प्रति विश्वास और परमात्मा के परिवर्तन के कार्य के प्रति आस्था ही उनके लाइफ में एक आत्मबल प्रदान करता दिखाई पड़ता है। उन्होंने संसार के पांचों महाद्वीप सहित 140 देशों से भी अधिक में भ्रमण कर परमात्म संदेश का परचम लहराया।

मुझे दादी के साथ की एक अनुभव याद आता है कि जब मैं दादी से मिलने गया तो मैंने देखा कि दादी के दिल की सच्चाई और सफाई गज़ब की है। यज्ञ कारोबार के कारण मेरा दादी से मिलना होता रहता है तो दादी एक एक बात पूछती है, उन्नति के चार्ट के बारे मे पूछती है तथा सेवाओं में क्या नवीनता है उसके बारे में पूछती है। यज्ञ कारोबार में कैसे साफ सुथरा रहना है उसकी हमेशा सीख देती रहती है। सच्चाई और सफाई के बारे में वे कहती हैं कि जहां सच्चाई है और दिल साफ है वहां परमात्मा की मदद है ही है, ऐसा दूसरों को स्मृति दिलाती हैं। वे कहती हैं कि ये जन्म परमात्मा के साथ जीने का है, उसमें एक सेकण्ड भी वेस्ट नहीं करना चाहिए। हर क्षण, हर पल परमात्मा के कार्य के प्रति ही समर्पित होता रहे यही उच्चतम साधना है और वहीं सफलता भी है।

दादी के जीवन में हमने देखा कि कितनी भी परिस्थितियां उनके सामने आईं लेकिन दादी जी ने उन परिस्थितियों में परमात्मा का साथ आत्मसात कर उसे पार किया, उसका जीता जागता एक उदाहरण है कि जब लंदन में ग्लोबल हाउस बन रहा था तब आर्थिक रीति से वहां पर इतनी समृद्धि नहीं थी लेकिन दादी का परमात्मा में विश्वास, उनके प्रति समर्पण भाव और परमात्मा का कार्य है ये एहसास उन आर्थिक परिस्थितियों पर भी भारी पड़ा। परिणामस्वरूप इतना बेहद ग्लोबल हाउस बन गया जो आज लंदन में ओवरसीज़ के मुख्यालय के रूप में कार्य करता है और सेवाएं कर रहा है। ऐसे कई असंभव कार्य को भी संभव होते हुए हमें दादी के जीवन में देखा व अनुभव किया।

दादी जी निडरता पूर्वक अपनी सत्यता को शालीनता के साथ रखने में माहिर हैं।

दादी जी ने अपने मन की स्थिति को इतना परिपक्व बनाया, मन को इतना पोषित किया कि जब चाहे अपने मन के संकल्पों को शक्ति के रूप में प्रयोग करती हैं। मन जैसे कि उनके एक श्रेष्ठ साथी के रूप में उनके साथ काम करता है। तभी तो उनकी मन की स्थिति को जब साइंस के द्वारा टेस्ट किया गया तो उन्हें विश्व स्थितप्रज्ञ महिला के रूप में पाया गया। हम कहते हैं मन जीते जगत जीत, दादी में हमने ये देखा, वाकई में अपने मन पर गज़ब का नियंत्रण उनका रहता है। यज्ञ के प्रति उनकी वफादारी और इमानदारी किसी से भी अछूती नहीं है। ना वे खुद कुछ भी वेस्ट करेंगी और ना वेस्ट करने देंगी। उनकी कुशल प्रशासनिक क्षमता को देखते हुए 91 साल की उम्र में विश्व के सबसे बड़े महिला संगठन की प्रशासिका के रूप में उनकी नियुक्त की गई। ये अपने आप में दादी की 100वें साल में सबसे बड़ी उपलब्धि है और तब से लेकर इस विशाल संगठन में समर्पित भाई बहनों की पालना करते हुए परमात्मा के विश्व परिवर्तन के कार्य को आगे बढ़ा रही हैं।

ऐसे हमारी दादी के 100वें साल में कदम रखने पर हम सभी आत्माएं बहुत ही गौरवान्वित हैं और आने वाले समय में दादी इसी तरह अपने जीवन के कई साल हमारे साथ बिताएं ऐसी हमारी आशा और शुभकामनाएं हैं। ऐसी हमारी मीठी प्यारी दादी को शत् शत् नमन।

...श्रेष्ठ सोच से समय सफल होता है...

ज्ञान की वैल्यु बहुत है, समय की वैल्यु बहुत है। मैं बाबा को प्यार करती हूँ, बुद्धि साफ हो, श्रेष्ठ सोचने की ताकत हो। जैसा समय वैसी बात, फालतू बात नहीं। फालतू बातें एक बारी किया तो आदत पड़ जायेगी। बड़ी खराब आदत है, फालतू सोचा तो सोचने की आदत पड़ जायेगी। परन्तु मैंने देखा है अच्छा सोचने की वैल्यु से टाइम सफल होता है। तो जैसे बाबा समझता है, ऐसा हमारा पुरुषार्थ हो तो बाप की दुआयें और सबकी दुआयें...। श्रीमत को पालन करने की कमी होगी तो बाबा की याद नहीं आयेगी। जब कोई कठिनाई वाली बात होती है तो वो याद के समय खास याद आती है। अगर कठिनाई वाली बात याद के समय याद आयी तो कठिनाई बढ़ेगी या कम होगी? याद यथार्थ है तो कठिनाई को भगा देगी। यह दिन रात, सोते जागते, खाते पीते, कहाँ भी रहते, अपने को चेक करते जाओ चेंज होते जाओ। जिसको हिम्मते बच्चे मदद बाप का अनुभव होगा उसका उमंग-उत्साह कम नहीं होगा। किसी भी बात में डाउट नहीं रखो, ज़रूर होगा। बाबा की मदद बहुत है, पर बाबा की मदद तब है जब सच्ची दिल पर साहेब राज़ी है। ऐसे बाबा मदद नहीं करता है। एक बार भी दिल में सच्चाई या सफाई नहीं रही तो बाबा की मदद का जो कॉन्ट्रैक्ट है वो कैन्सिल हो जायेगा। फिर अकेला कुछ नहीं कर सकता है, सिर भारी हो जाता है। बोलना चलना भारी, भारी क्या करेगा? थोड़ा काम करके थक जायेगा। थक मत जाना रात के राही... सुबह की मंज़िल दूर नहीं, यह गीत बहुत अच्छा है। थकावट की थोड़ी-सी भी बीमारी किसी को हो, तो तन भी थकावट के कारण बीमार पड़ता है इसलिए कभी थकावट न हो और खुशी जैसी खुराक हो, चिंता का नाम-निशान न हो।

खुशी की खुराक चलने में, उड़ने में मदद करती है। फिर जितना चलते हैं, आगे बढ़ते हैं, उतना उमंग-उत्साह से आगे ऐसे बढ़ते हैं जैसेकि कोई मुझे चला रहा है। चल उड़ जा रे पंछी, पंख आ गये। वन्डरफुल बाबा आप उड़ा रहे हो।

एक बारी भी किसी कारण से अगर पुरुषार्थ में ढ़ीलापन आया तो सुस्ती आयेगी, थकावट होगी। तो खबरदार रहो, होशियार रहो और लगातार पुरुषार्थ करते रहो। पीछे नहीं देखना है, पुराने ज़माने में जब कोई सेवा पर जाते थे या जॉब पर जाते थे, तो घर से जायेंगे तो वापस ऐसे मुड़कर नहीं देखेंगे, अपशकुन लगेगा। यह भी बड़ी भूल है, हम घर जा रहे हैं इतनी कमाई कर रहे हैं, पीछे नहीं देखना है। बीती बात को देखना यह अपशकुन है। आगे नहीं चल सकेंगे। बीती बातें फिर ऐसी हैं, ऐसे ऐसे पकड़के माथा ही खराब कर देंगी। अगर मैं खबरदार, होशियार नहीं हूँ, बाबा की मदद के अनुसार नहीं चल रही हूँ.. क्योंकि बाबा की मदद लेती हूँ तो मददगार बनती हूँ, बाबा की सेवा में हाज़िर रहती हूँ। अगर नहीं रहती हूँ, फ्री हूँ तो ईविल बातें, ईविल सोल्स सब वार करती हैं। भगवान की शक्ति नहीं है तो वह पकड़ती है। किसी को भी ईविल सोल क्यों तंग करती है? कारण क्या है? ज़रूर प्युरिटी की शक्ति जो बाबा से मिल रही है, वह नहीं ले रहे हैं। इतनी भी इम्प्युरिटी है तो कहीं से भी प्रवेशता हो सकती है, इसलिए कोई भी प्रकार का फैशन आदि नहीं करो। बहुत-बहुत सिम्पल रहो, स्वच्छ रहो।

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

आपस में प्यार (सच्चा दिल का स्नेह) हो तो ऐसा रुहानी प्यार बाबा की याद दिलाता है। बाबा जो दे रहा है वो सारा दिन देखो। अगर किसी दो की आपस में नहीं बनती हो तो क्या करेंगे? हिसाब-किताब हो जायेगा। प्लीज़ सम्भालो, आपस में न बने, दोषी कौन? वो कहेगा यह दोषी, यह कहेगा वो दोषी, तो वेस्ट ऑफ टाइम। यह ऐसे वेस्ट ऑफ टाइम करने की आदत रियलाइज़ेशन से खत्म करो। कोई दोषी नहीं है, ड्रामा की नॉलेज सुख-शान्ति सम्पन्न बनाती है। हर एक का अपना पार्ट है, हमारी शुभ भावना है, सब ऐसे अच्छे और सम्पन्न बन जायें, ज़रूर बनेंगे, अच्छा जितना भी बनें, मैं भावना को कम नहीं करुंगी। अगर मैं भावना कम करुंगी तो नुकसान मेरे को होगा। शुद्ध और शुभ भावना से शान्त तभी रह सकेंगे जब बीती बातों के चिंतन से फ्री रहेंगे। कभी परन्तु नहीं कहो, परन्तु... कब-कब...यह शब्द बोलना भी बड़ी भूल है। कभी थोड़ा भी उल्टा कर्म होता है, तो सारी कमाई चट। तो शुभ बोलो, ऐसे वचन बोलो जो हमारा उमंग-उत्साह कभी कम न हो जाये। हमारे उमंग-उत्साह को देख औरों को भी उमंग-उत्साह के पंख आ जायें।

हर रोज़ मन की दिनचर्या बनाओ

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

प्रश्न: दादी जी, हमारे ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन पढ़ाई है सदा पढ़ाई पर हमारा ध्यान रहे इसके लिए क्या करें?

उत्तर: जो हमारे चारों सब्जेक्ट हैं उन पर विशेष ध्यान रहे। जब हम शुरु-शुरु में बाबा का बनते हैं तो बाबा और पढ़ाई पर बहुत ध्यान रहता है, बहुत उमंग-उत्साह होता है लेकिन धीरे-धीरे माया अपना रूप दिखाती है। पहले नशे में रहते हैं और पेपर के टाइम सोचते हैं, क्या होगा कैसे होगा। अगर हम बाबा की बनाई हुई दिनचर्या पर ध्यान दें तो सब ठीक हो जाता है। अगर हमारी दिनचर्या ठीक है तो हमारे जैसी खुशी और किसी को नहीं होगी। सुबह-सुबह मुरली सुनकर सारा दिन उसका अनुभव करें। मुरली और योग मिस नहीं करो। क्लास में सिर्फ प्रेज़ेन्ट के लिए नहीं बैठना लेकिन मन से भी प्रेज़ेन्ट रहना है। संग से अपनी सम्भाल करनी है। हमें भगवान मिला है यही नशा और खुशी हो।

प्रश्न: दादी जी, पर-चिन्तन से मुक्त कैसे बनें?

उत्तर: जब भी समय मिले बीच-बीच में मुरली का मंथन करो। परचिंतन से कोई भी फायदा नहीं और प्राप्ति भी नहीं। संगठन में परचिंतन चल सकता है लेकिन चलना नहीं चाहिए। पढ़ाई पर ध्यान देंगे तो सेफ रहेंगे। सारा दिन सेवा तो करते हैं लेकिन अपनी रीति अपनी प्रोग्रेस के लिए मन और बुद्धि का टाइम टेबल बनाओ। रोज़ सवेरे सोचो आज मुझे नया क्या करना है। आज कर्म और बोल में क्या नवीनता होगी। मन की दिनचर्या स्वयं बनाओ इसमें हल्के नहीं बनो। अपनी उन्नति के लिए मन का प्रोग्राम बनाओ। अपनी कमज़ोरी को जान अपने मन की दिनचर्या बनाओ। मन किसी भी बात में फेल न हो, सब बात में विजयी हो।

प्रश्न: दादी जी, चलते-चलते ईर्ष्या और रीस उत्पन्न हो जाती है, क्या यह ठीक है?

उत्तर: संगठन में ईर्ष्या और रीस होगी लेकिन इससे कोई फायदा नहीं और ही नुकसान है। ईर्ष्या की आदत पड़ गई तो निकलने में समय लगता है। हमारी नज़र भाई बहनों पर नहीं मम्मा बाबा पर जाये। भाई-बहनों को देखेंगे तो कमी नज़र आयेगी। हमें संगठन मिला है एक दो को उमंग से आगे बढ़ाने के लिए, ईर्ष्या करने के लिए नहीं। अपने ऊपर ध्यान दो मुझे क्या करना है। कमज़ोरी वाले को नहीं देखो, उमंग वालों को देखो।

प्रश्न: दादी जी, हिसाब-किताब बन रहा है या चुक्तू हो रहा है, उसकी निशानी क्या होगी?

उत्तर: अगर चुक्तू हो रहा है तो सन्तुष्टता और हल्कापन फील होगा, भारीपन नहीं लगेगा।

प्रश्न: दादी जी, सेवा का लक्ष्य क्या है?

उत्तर: सबको बाबा का परिचय देकर बाबा का बनाना, सिर्फ कनेक्शन में लाना नहीं। उनको बाबा का बनाकर उनकी पीठ करनी है, उमंग-उत्साह में लाना है, बीच में छोड़ नहीं देना है।

प्रश्न: दादी जी, बाबा कहते हैं फॉलो फादर करो, तो आपने अपने जीवन में ब्रह्मा बाप को कदम-कदम पर फॉलो किया है। दादी जी आपके अंदर जो बेहद की वैराग्य वृत्ति है, वह कौन-कौन से कदमों को अपनाने से आई है?

उत्तर: बाबा को तो हमने बचपन से ही 9 वर्ष की आयु से देखा। बाबा की हर चलन में न्यारा और प्यारापन था। अभी-अभी न्यारी और अभी-अभी प्यारी स्थिति में है। प्यार भी दिल का, दिल का प्यार दिल को छू लेता है। बाबा अशरीरी अवस्था का अभ्यास एवं आत्मिक स्थिति का अभ्यास जो करते थे वह हमें अनुभव होता था और हमने भी बाबा से यही सीखा।

प्रश्न: दादी जी, बाबा ज्ञान की कौन सी प्वाइंट बुद्धि में रखते थे?

उत्तर: मुख्य तो यही कि अशरीरी बनना है। अशरीरी बनकर हमको बोलना भी और देखना भी है। बाबा की अशरीरी स्थिति होने के कारण सहज ही अशरीरी बन जाते थे, मेहनत नहीं करनी पड़ती थी।